मिलिए

रोज़बड यलो रोब से

रोज़बड यलो रोब जब छोटी थीं, उनके माता-पिता उनके कबीले – लाकोटा ओयाटे – की कहानियाँ सुनाते थे। उस वक़्त बच्चों से यह उम्मीद रखी जाती थी कि वे इन कहानियों को कंठस्थ कर लेंगे और बाद में अपने बच्चों को सुनाएंगे।

पर यलो रोब ने इन कहानियों को श्रोताओं के एक अधिक व्यापक समूह को सुनाया है। अपनी किताबों, *टॉनवेया एण्ड द ईगल्स, अदर लाकोटा इन्डियन टेल्स्,* और *द एल्बम ऑफ अमेरिकन इन्डियन* के ज़रिए, रेडिया तथा टेलिविज़न पर आ कर, स्कूलों और पुस्तकालयों में जा कर उन्होंने ये कहानियाँ दुनिया के सामने रखी हैं।

टॉनवेया और बाज़

पुनर्कथनः रोज़बड यलो रोब

चित्रः रिचर्ड रेड आउल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

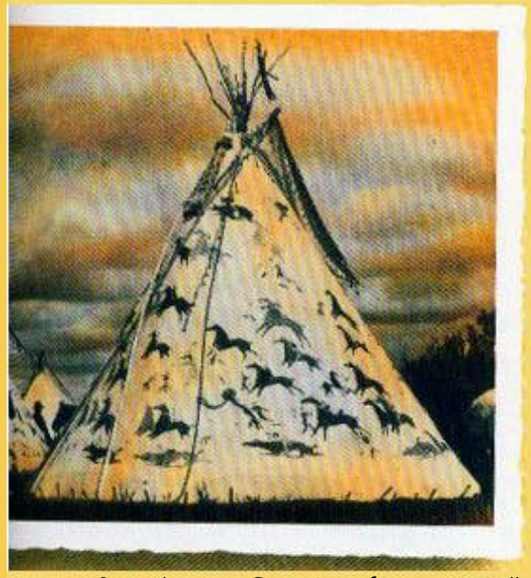

अमरीका के मूल निवासी कई सुन्दर चीज़ें बनाया करते थे, जो सुन्दर होने के साथ उपयोगी भी हुआ करती थीं। ऊपर बिल्कुल बांई ओर ओगालाला सू की प्रेम बाँसुरी (लव फ्लूट) है जो एक पाखी के आकार की है, जिसकी आवाज़ को वह प्रतिध्वनित करती है। दाहिनी ओर सू क़बीले की एक चित्रित ढ़ाल है। इस पन्ने पर ओल्ड बुत की टीपी (चमड़े से बना तम्बू) है, जो 'विन्टर काउन्ट' से ढ़का है। नीचे हाई हॉक का विन्टर काउन्ट का एक दृश्य है। विन्टर काउन्ट सू लोगों के इतिहास को चित्रलिपि में दर्शाता है।

आमुख

यह कहानी मुझे मेरे पिता शैनोविशाक्टे ने सुनाई थी, जिन्हें बचपन में उनके संक्षिप्त नाम चानो से बुलाया जाता था।

मेरे पिता का जन्म उस प्रदेश के दक्षिणी भाग में हुआ जो आज मोन्टाना कहलाता है। वे अपने क़बीले, लाकोटा ओयाटे या सू नेशन, के साथ रहते थे। आज जो इलाके दक्षिणी डकोटा, उत्तरी डकोटा, नैब्रस्का, वायोमिंग व मोन्टाना कहलाते हैं, उसमें यह क़बीला घुमन्तु जीवन बिताया करता था। मेरे दादा का नाम तासीनागी यानी यलो रोब था। वे वंशानुगत मुखिया के बेटे थे। उन्होंने अपना पद निडर योद्धा और उम्दा शिकारी होने के कारण पाया था।

मेरे दादा अपने गिरोह के सरदार थे। मेरी दादी का नाम ताहकाविन था, जिसका मलतब हिरणी होता है। मेरे पिता उनके पसन्दीदा सन्तान थे, क्योंकि वे पहली सन्तान थे।

जब मेरे पिता शिशु ही थे, दादा तासीनागी और दादी ताहकाविन ने अपने कबीले के लोगों को एक बड़ी दावत दी। उस समय उनका नामकरण भी हुआ और उन्हें शैनोविशाक्टे का नाम दिया गया, जिसका मतलब होता है 'जंगल में कत्ल करने वाला'। उनके दोनों कान छेदे गए ताकि वे बालियाँ पहन सकें। तासीनागी ने अपने दो सबसे बढ़िया टट्टुओं का दान भी किया।

शैनोविशाक्टे अपने दादा और दादी की टीपी में काफ़ी घंटे गुज़ारते थे। वे दानों नन्हे शैनोविशाक्टे को क़बीले की दंत-कथाएं सुनाते, उसका इतिहास बताते। उनसे उम्मीद की जाती थी कि वे इन तमाम कहानियों को मुँहज़बानी याद कर लेंगे ताकि बाद में उन्हें अपने खुद के बच्चों को सुना सकें। मेरे पिता को महान रहस्यमयी आत्मा वाकन-टांका का सम्मान और श्रद्धा करना सिखाया गया। उन्होंने मशहूर सरदारों, योद्धाओं और ओझाओं की महान व प्रेरक कहानियाँ भी सीखीं। शिकार और युद्ध करने के लिए उन्हें तीर-कमान बनाने के पुराने तरीके सिखाए गए। नंगे पीठ घोड़े की सवारी करना सीखा। हिरण और जंगली भैंसे का शिकार करना सीखा। उन्हें अपने साथियों के साथ कुश्ती करने, तैरने ओर दौड़ने में बहुत मज़ा आता था।

जब भी दादा जी शिकार पर निकलते शैनोविशाक्टे अपने पिता के साथ जाते। हिरण और बारहसिंगे को मार गिराना, तब मैदानी इलाके को पार करने के लिए उसे घसीट कर शिविर में लाना सीखते ।

प्रकृति के इतने क़रीब रहने के कारण उन्होंने पशुओं और पक्षियों की ख़ासियतों के बारे में जाना। वे यह बखूबी समझ गए कि जंगली भैसों या दूसरे पशुओं को मौज-मस्ती के लिए नहीं मारा जाता। उन्हें सिर्फ, ज़रूरत पूरी करने के लिए मारना चाहिए।

मेरे पिता ने पहले गोरे आदमी को तब देखा जब उनके माता-पिता ने मिसूरी नदी के किनारे पड़ाव डाला था। वे शिविर में अपने भाई के साथ खेल रहे थे, कि उन्होंने एक विचित्र जीव को अपनी ओर आते देखा। उसके हल्के रंग के लम्बे बाल और दाढ़ी थी। वह बड़ा-सा टोप पहने था और हिरण के चमड़े का झल्लरदार कोट पहने था। उसके कंधे पर बन्दूक टिकी थी। चानो यह तय नहीं कर पा रहा था कि वह कोई इन्सान है या किसी तरह का जानवर। जैसे-जैसे वह जीव पास आने लगा चानो को लगने लगा कि वह कोई दुष्ट आत्मा है। अपनी छोटी-सी ज़िन्दगी में पहली बार उसके साहस ने उसका साथ नहीं दिया। वह डर के मारे अपने भाई को पीछे छोड़, टीपी में अपने पिता के पास भागा। पिता दुष्ट आत्मा की कहानी सुन हंस पड़े। उन्होंने चानो से कहा कि उसने एक गोरे को देखा है। उन्होंने दोनों लड़कों को आगाह किया कि वे शिविर से दूर न जाएं, नहीं तो गोरे उन्हें अगुवा कर सकते हैं।

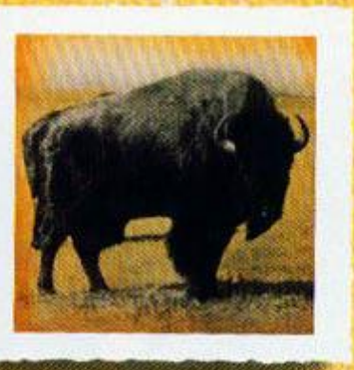

यह चित्र गर्व से खड़े चानो के पिता सरदार यलो रोब का है। उनके बांईं ओर जंगली भैंसा है जिसका सू लोग आदर करते हैं। नीचे सू लोगों द्वारा चित्रित भैंसे की चमड़ी से बना लबादा है, जिस पर सूर्य की चहुँ ओर फैलती रोशनी का डिज़ाइन आँका गया है।

चानो को योद्धाओं के लौटने के बाद उनसे गोरों के साथ हुई मुठभेड़ों की उत्तेजक कहानियाँ सुनने की यादें थीं। गोरों ने वादा किया था कि वे लाकोटा-ओयाटे क़बीले की ज़मीनों से दूर रहेंगे। पर वे हमेशा अपने वादे भूल जाते, सो भिडन्त होती रहती थी।

जब चानो क़रीब पंद्रह साल का हुआ अपने क़बीले की दुनिया में यश कमाने के उसके सपने टूट गए। जनरल आर. एच. प्रैट कबीले के मुखियाओं के पास आए और उनसे अपने बच्चों में से एक को पूर्व दिशा में बने कारलाई नामक एक स्कूल में भेजने को कहा। जनरल ने कहा कि परिस्थितियों के बदलने के कारण उनकी ज़िन्दगी भी तेज़ी से बदलेगी। भैसों को बड़ी तादाद में मारा जा रहा था, और देशज लोगों के लिए रिजर्वेशन बनाए जा रहे थे। सो जनरल ने समझाया कि कबीले के नेताओं को नई दुनिया के बारे में जान लेना चाहिए, क्योंकि उसके तौर-तरीके इन्डियनों के तौर-तरीकों से बिलकुल फ़र्क हैं।

उनकी इच्छा के विरुद्ध मेरे पिता को जनरल प्रैट के साथ कारलाई जाने के वास्ते भेज दिया गया। मेरे पास मेरे पिता के वे चित्र हैं जो पहले-पहल स्कूल पहुँचने पर खींचे गए थे। इनमें वे चमड़े से बने कपड़े और मौकेसिन (नरम चमड़े से बने सपाट जूते) पहने हैं, उनके बाल लम्बे हैं। बाद के चित्र भी हैं, जो उनके खुद के कपड़े ले लिए जाने और स्कूल की वर्दी दिए जाने के बाद के हैं, इनमें उनके बाल छोटे हैं। जब उन्हें पहली बार नाई के पास ले जाया गया, मेरे पिता ने सोचा कि उनकी माँ की मौत हो गई है। क्योंकि सू लोग शोक मनाने के लिए ही अपने बाल कटवाते हैं। जब दूसरे बच्चों के भी बाल काटे गए उन्होंने सोचा कि वे सब भी उसकी माँ का मातम मना रहे हैं।

स्कूल में बच्चों को उनकी भाषा नहीं बोलने दी जाती थी, बात सिर्फ़ अंग्रज़ी में ही की जा सकती थी। सो कई सप्ताह गुज़रने के बाद ही मेरे पिता को पता चला कि उनकी माँ सही-सलामत हैं।

शिक्षकों का बरताव अच्छा था पर जब तक मेरे पिता ने उनकी भाषा नहीं सीख ली उन्हें उन पर कतई भरोसा नहीं हो सका था। वे अच्छे विद्यार्थी थे, सभी खेल-कूद व दौड़ों में भाग लिया करते थे और फुटबॉल टीम का भी हिस्सा थे। गर्मियों में वे खेतों में काम करते थे। साथ ही वे मूडी इन्स्टिट्यूट की ग्रीष्म शाला में भी जाते थे, जो नार्थफील्ड, मैसाच्यूसेटस् में था।

कारलाई छोड़ने के पहले चैंसी यलो रोब को, जो अब शैनोविशाक्टे का नाम था, कांग्रेस ऑफ नेशन्स् (देशज अमरीकियों का सम्मेलन) में उत्तर के इन्डियनों के प्रतिनिधि के रूप में चुना गया। यह कांग्रेस शिकागो में विश्व कोलम्बियन प्रदर्शनी के आरंभ में आयोजित की गई थी।

शैनोविशाक्टे ने 1895 में अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की। इसके बाद वे सरकारी सेवा में लगे और जीवन का अधिकांश भाग विभिन्न इन्डियन स्कूलों में बिताया। उन्होंने कई साल दक्षिण डकोटा की रैपिड सिटी में एक गैर-रिज़र्वेशन आवासीय स्कूल में बिताए।

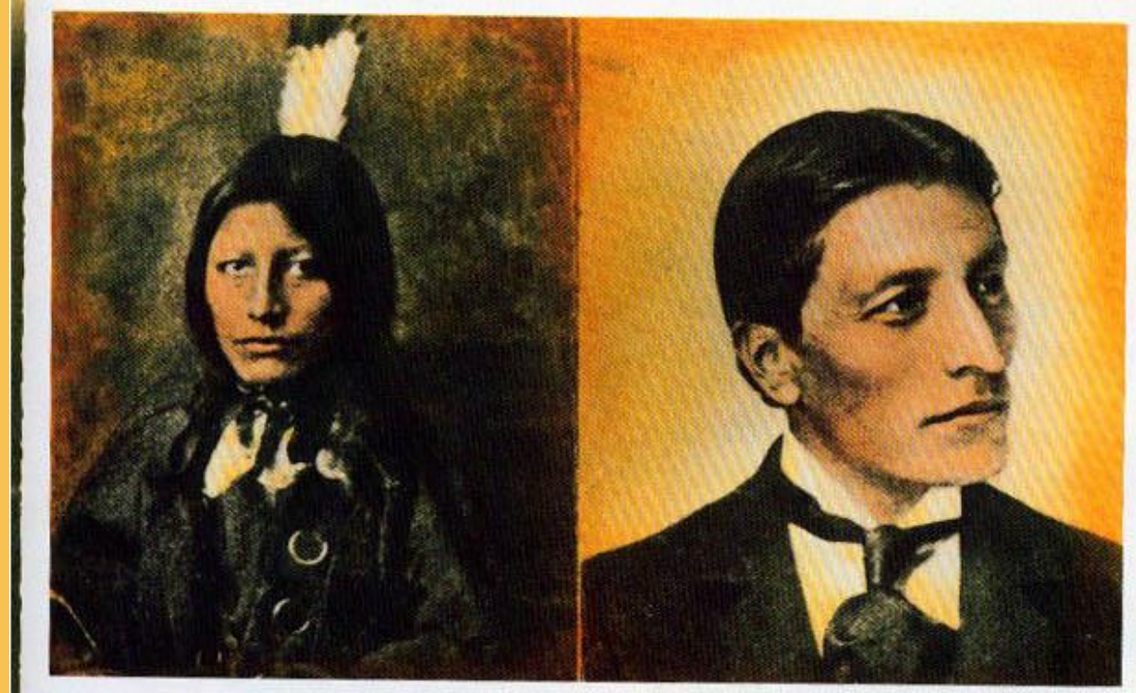

चैंसी यलो रोब कारलाई इन्डियन स्कूल में दाखिल होने के पहले और बाद में। नीचे कच्चे चमडे पर आँका गया चित्र और लकड़ी से बना एक घोड़ा।

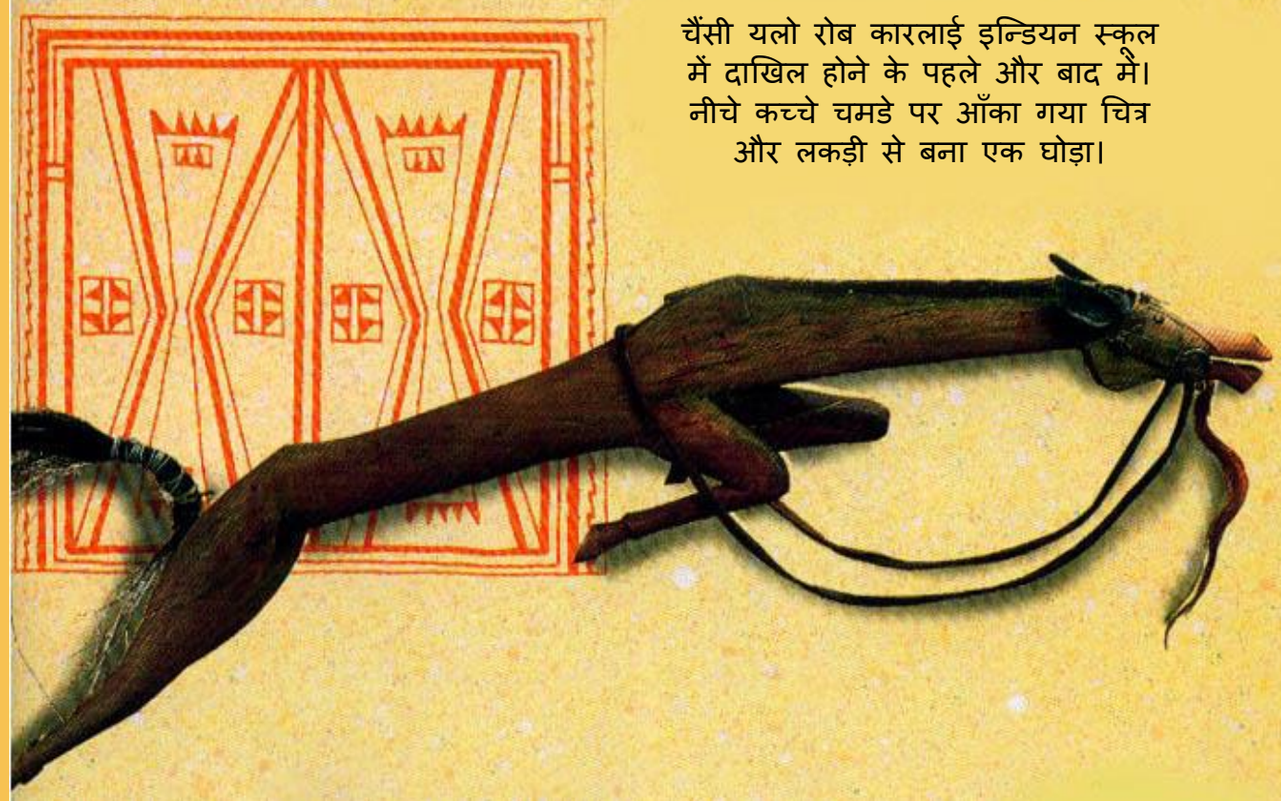

रैपिड सिटी में मेरे पिता की मुलाकात मेरी माँ से हुई। उन्हें एक-दूसरे से प्रेम हुआ, उन्होंने शादी कर ली और वहीं काम करते रहे। मेरे पिता को इस बात से निराशा तो थी कि उनका कोई बेटा नहीं था, पर उन्होंने तीन बेटियों से संतोष कर लिया।

हम किस्मत वाले थे कि हमारे माता-पिता ने हमें अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में सिखाया। जिस तरह अनेक पीढ़ियों से लोग अपने बच्चों को कबीले की कहानियाँ सुनाते रहे थे, ठीक उसी तरह हमें भी उन कहानियों को सुनाने की कोशिश मेरे पिता ने की, जो उन्होंने खुद अपने बचपन में सुनी थीं। मुझे अपनी माँ और पिता की मृत्यु के बाद उनकी हाथ से लिखी कहानियाँ भी मिलीं।

मेरे पिता पहले तो द सोसायटी ऑफ अमेरिकन इन्डियन्स् में अपनी गतिविधियों के कारण मशहूर हुए। कई संगठन उन्हें वक्ता के रूप में आमंत्रित करने लगे। जल्द ही उन्हें दो संस्कृतियों के बीच का सेतु कहा जाने लगा।

पर कई बार वे इस तरह सरकार की आलोचना करते कि उन्हें सू लोगों का प्रवक्ता भी कहा जाने लगा।

मेरे पिता ने दक्षिण डकोटा के डेडवुड में उन अनुष्ठानों की अध्यक्षता की जिनमें राष्ट्रपति कैल्विन कूलिज को हमारे कबीले में शामिल किया गया।

फिल्मों में जिस तरह देशज लोगों को चित्रित जाता था वह मेरे पिता को नापसन्द था। पर इसके बावजूद उन्हें *द साइलैन्ट एनिमी* में मुख्य भूमिका अदा करने के लिए मना लिया गया। इस फिल्म का लेखन व निर्माण डगलस बर्डन ने किया था, जो अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नैचरल हिस्ट्री के न्यासी थे। यह पहली ऐसी फिल्म थी जिसके सभी किरदार इन्डियनों द्वारा निभाए गए थे। कोई भी अदाकार पेशेवर अभिनेता नहीं था। यह मौन दुश्मन यानी भूख, के विरुद्ध ओजिबवे के संघर्ष की कहानी है।

वे उस वक्त कांग्रेस के लिए दक्षिण डकोटा से चुनाव भी लड़ रहे थे। फिल्म में *द साइलैन्ट एनिमी* का परिचय देने वाला मौखिक आमुख भी मेरे पिता द्वारा बोला गया था। इसकी रिकॉर्डिंग सबसे आखिर में न्यू यॉर्क के एक स्टूडियो में की गई। इस दौरान वे ठण्ड खा गए, यह सर्दी निमोनिया में बदली। कुछ दिनों बीमार रहने के बाद रॉकफैलर इन्स्टिट्यूट के अस्पताल में उनकी मौत हो गई।

पिता की मृत्यु के बाद राष्ट्रपति कूलिज ने, जो अमूमन कम बोलते थे। उनके लिए एक अद्भुत श्रद्धांजलि लिखी। उसमें उन्होंने कहा, "वे दो भिन्न प्रजातियों के बीच एक प्रशिक्षित व बुद्धिमान संम्पर्क सूत्र थे। वे जन्मजात नेता थे जिन्हें यह अहसास हो चुका था कि इन्डियन लोगों की नियति हमारे देश की नियति से अभिन्न रूप से जुड़ी है। अपने क़बीले के प्रति उनकी कटिबद्धता ने उन्हें सबसे देशभक्त अमरीकी बनाया।

टॉनवेया और बाज़

कबीले में सब लोग बेहद खुश थे। नई घास उगने का महीना जो आ गया था। पूरा शिविर मैदानों में नया घर बसाने जाने की तैयारी कर रहा था। इससे वे शिकार के ज़्यादा पास हो सकेंगे, सो सब उत्साहित थे, सिवा चानो के। उसे अपने शिविर की यह जगह बड़ी पसन्द थी। उसे जाने के खयाल से अभी से ही पहाड़ियों की याद सताने लगी थी।

चानो की माँ ताहकाविन ने कच्चे चमड़े से बने बस्तों में कपड़े और खाना रख ट्रैवाइस (बेपहिया घसीटा गाड़ी) पर बांध दिया, जिसमें दो डंडों के बीच चमड़े का जाल तना था। दूसरा ट्रैवाइस पहले से ही सफ़र के लिए तैयार था।

जब पिता तासीनागी ने सुझाया कि वे तीनों आखिरी बार अपनी पसन्दीदा पहाड़ी तक जाएं, चानो खुश हो गया।

तीनों घोड़ों पर बैठे साथ-साथ जा रहे थे कि तासीनागी ने चानो का ध्यान दो बड़े पक्षियों की ओर खींचा, जो उनके सिर के ऊपर मंडराते उड़ रहे थे। ये वानब्ली यानी बाज़ थे। चानो जानता था कि बाज़ उसके लोगों के पवित्र पक्षी हैं, जिन्हें कभी मारना नहीं चाहिए।

उसने अपने पिता के बालों में खोंसे गए बाज़ के पंख को देखा, जो वीरता का निशान होता है। वह यह सोचने लगा कि लाकोटा और दूसरे कबीले के लोग वानब्ली की इतनी श्रद्धा क्यों करते हैं। किसी दिन अपने पिता से वह यह सवाल ज़रूर पूछेगा।

जिन दो बाज़ों को वे देख रहे थे वे इन तीन मुसाफ़िरों से डरते नहीं लगे। वे नीचे को उतरते हुए उनके पास आते गए, उनके मंडराने वाले चक्कर छोटे होते गए। लग यह रहा था कि वे मुसफिरों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे हों।

अचानक चानो ने पुकार कर कहा, "देखो, आते! उनके पंखों के सिरे लाल हैं। मुझे तो पता ही नहीं था कि वानब्ली के पंख लाल भी होते हैं।"

"क्या तुम्हें पक्का भरोसा है कि उनके पंखों के सिरे लाल हैं, मेरे बेटे?"

"बेशक पिताजी, दानों ही पक्षियों के पंखों के सिरे लाल हैं।"

"ताहकाविन," तासीनागी ने अपनी बीबी से कहा, "हमारे बेटे को टॉनवेया को पवित्र पक्षियों के दर्शन का आशीर्वाद मिला है। उन्हें कम ही लोग देख पाते हैं। यह तो उसके लिए शुभ-संकेत है।"

"आपका क्या मतलब है, आते?" चानो ने जानना चाहा। "टॉनवेया के पवित्र पक्षी भला क्या हैं?"

"ये वे बाज़ हैं जिन्होंने बहुत समय पहले टॉनवेया की जान बचाई थी। टॉनवेया एक महान सरदार था और महान ओझा भी।"

चानो ने तुरंत चिरौरी की कि पिता उसे टॉनवेया की कहानी ज़रूर सुनाएं। तासीनागी ने चानो को उसका घोड़ा पास लाने का इशारा किया।

"यह उन गर्मियों की बात है जब आग का गोला आसमान से गिरा था। लाकोटा लोगों ने उसी जगह शिविर बनाया था, जिसके आस-पास हम अभी हैं। उस गिरोह में एक नौजवान भी था जिसका नाम टॉनवेया था। वह सिर्फ़ देखने-भालने में सुंदर ही न था, बल्की बहुत ही अच्छा धावक और शिकारी भी था। वह ख़तरों के सामने बहादुर बना रहता था। सब कहते थे कि वह एक न एक दिन ज़रूर सरदार बनेगा। हर कबीले को हमेशा ही बहादुर और अच्छे सरदारों की ज़रूरत होती ही है।

"एक दिन टॉनवेया शिकार पर निकला। उसने जंगली भैंसों के एक झुण्ड को पहाड़ियों के पास चरते देखा। उसे एक मोटी-ताज़ी मादा भैंस दिखाई दी, उसे चुन कर टॉनवेया ने एक तीर सीधे उसके कलेजे की ओर चला दिया। जब वह उस भैंस का चमड़ा उतार रहा था उसने एक बड़े बाज़ को अपने सिर के ऊपर मंडराते देखा।

उसकी उड़ान देखने पर उसने ग़ौर किया कि वह पहाड़ी की एक खड़ी चट्टान के आगे निकले सिरे पर जा बैठी है। वह पहाड़ी क़रीब चैथाई मील की दूरी पर थी। टॉनवेया को मालूम चल गया कि उसका घोंसला वहीं होगा। उसने तय किया कि वह उसे खोज निकालेगा और अगर उसमें नन्हे बाज़ होंगे तो उन्हें उनके पंखों के लिए पाल-पोस कर बड़ा करेगा।

"उसने चट्टान के आगे निकले हिस्से को ध्यान से देखा उसे समझ आ गया कि मैदान से खड़ी चट्टान तक पहुँचना असंभव होगा। घोंसले तक पहुँचने का अकेला रास्ता पीछे से ऊपर जा वहाँ से नीचे उतरना ही है। भैंस की पूरी चमड़ी उतारने के बाद टॉनवेया ने उसकी कच्ची चमड़ी को पतली लम्बी पट्टियों में काटा। तब उन्हें पहले खींचा-ताना, फिर उसमें तब तक बल डाल बंटा जब तक उसकी मज़बूत रस्सी न बन गई।

"उसने रस्सी को अपनी कमर के गिर्द लपेटा और पहाड़ पर चढ़ गया। जब वह उस जगह पहुँचा जो चट्टान की नोक के ठीक ऊपर थी, उसने रस्सी का एक सिरा देवदार के पेड़ से बांधा और दूसरा नीचे लटका दिया। नीचे देखने पर उसने पाया कि रस्सी घोंसले से कुछ ही फीट की दूरी पर लटक रही है। उसकी योजना यह थी कि वह रस्सी की मदद से सरक कर नीचे उतरेगा। तब बाज़ के बच्चों को रस्सी के किनारे से बांध देगा। खुद वापस ऊपर पहुँच वह बच्चों को ऊपर खींच लेगा। वह उन्हें शिविर ले जा सका तो सब उसका सम्मान करेंगे। और बन्दी बाज़ों के जोड़े से कई योद्धाओं को पंख मिल सकेंगे।

टॉनवेया ने खद को बड़ी सावधानी से नीचे उतारा। जल्द ही वह चट्टान के आगे निकले हुए नुकीले हिस्से पर खड़ा था। घोंसले में दो खूबसूरत नन्हे बाज़ थे, जिनके सभी पंख तो उग चुके थे पर वे अब तक उड़ नहीं सकते थे। उसने दोनों को रस्सी के सिरे से बांधा और ऊपर चढ़ने की तैयारी की। पर जैसे ही उसने अपना वज़न रस्सी पर डाला वह तो सरक कर नीचे आ गिरी। कच्ची चमड़ी से बनी होने के कारण पेड़ से बंधी उसकी गांठ फिसल कर खुल चुकी थी।

"टॉनवेया को अहसास हुआ कि वह फंस चुका है। ऐसे में केवल वाकन - टांका, रहस्यमय आत्मा ही उसे भूख और प्यास से होने वाली धीमी मौत से बचा सकती थी। क्योंकि जब उसने नीचे देखा तो पाया कि ज़मीन सैंकड़ों फीट नीचे है, और सपाट चट्टान पर हाथ-पैर टिकाने की कोई जगह थी ही नहीं कि वह नीचे उतर सके। इसी तरह ऊपर चढ़ने के लिए भी हाथ से पकड़ने या पैर टिकाने का उपाय नहीं था। वनाब्ली ने अपना घोंसला बनाने के लिए सचमें सही जगह चुनी थी।

"बहादुर होने के बावजूद टॉनवेया को आतंक ने आ घेरा। वह उस दिशा में ताकने लगा जिस दिशा में उसके लोग रहते थे। "मा हियोपो! मा हियोपो!" वह चीखा (मेरी मदद करो!) पर जवाब में उसे अपनी ही आवाज़ की गूंज सुनाई दी।

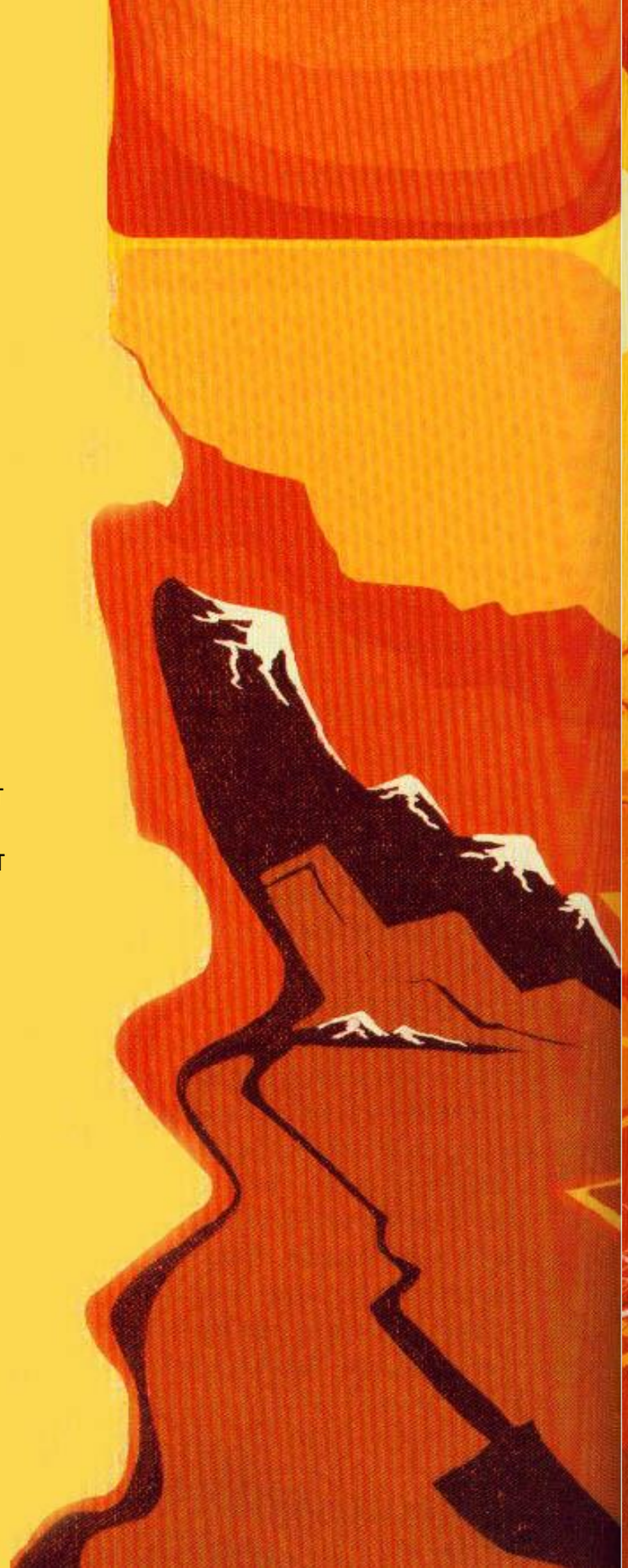

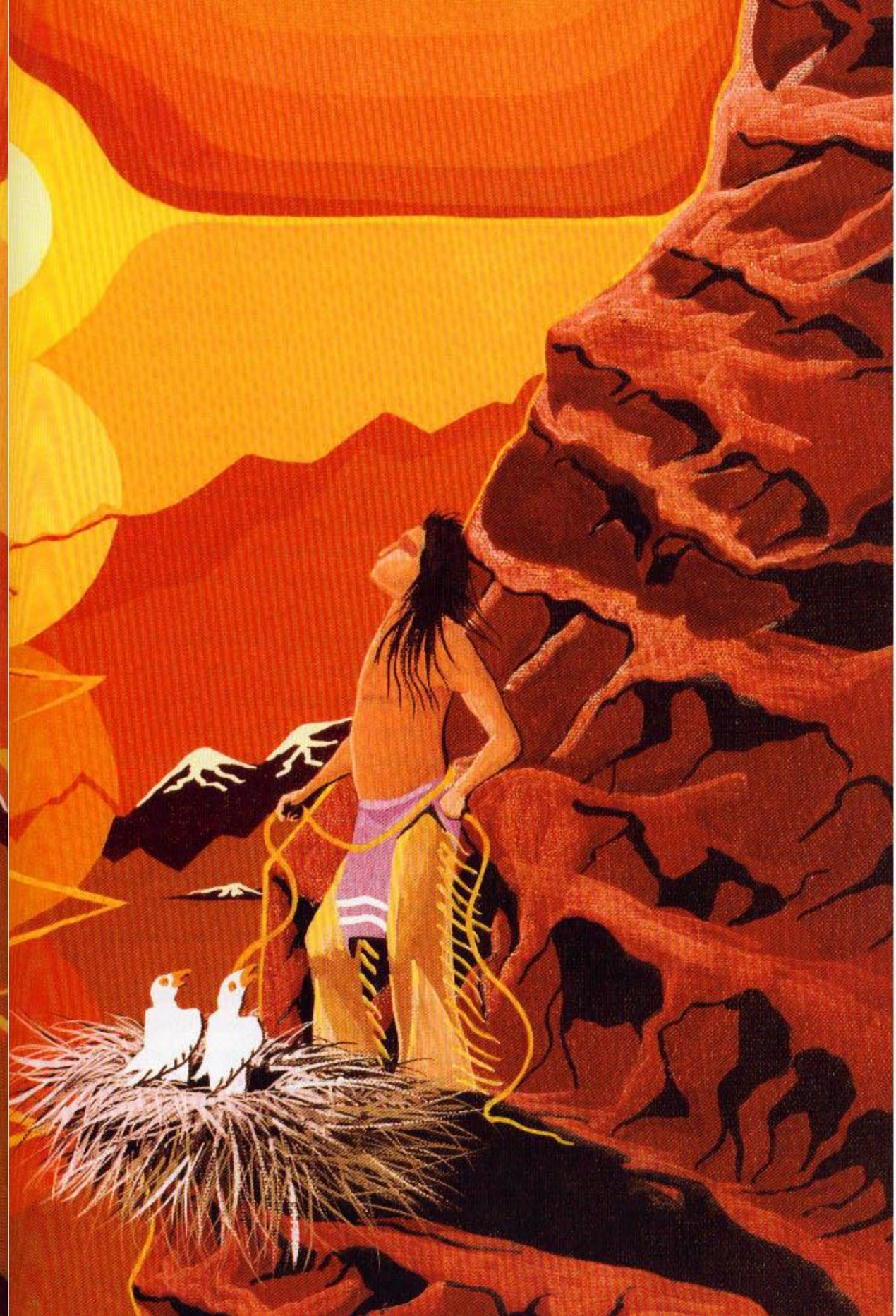

“जब सूरज ढ़लने को हुआ माँ बाज़ घोंसले को लौटी। अपने बच्चों के पास एक आदमी को देख वह गुस्से से चिंचिंयाई। वह गोल-गोल मंडराने लगी, और बीच-बीच में तेज़ी से टॉनवेया और अपने बच्चों की ओर झपटने लगी। दोनों बच्चे भी पंख फड़फड़ाते माँ को पुकारने लगे। आख़िरकार हताश हो माँ एक बार फिर घोंसले की ओर झपटी और तब चीखते हुए दूर उड़ गई। रात हुई, आसमान में तारे नज़र आने लगे। चट्टान के आगे निकले हिस्से में दोनों नन्हे पक्षियों के साथ टॉनवेया अकेला था।

“दूसरे दिन जब सूरज उगा, टॉनवेया बेहद थका हुआ था। वह रात भर सोया जो नहीं था। चट्टान की नुकीली जगह इतनी संकरी थी कि उसे नींद में लुढ़क कर गिरने का डर था। सूरज आसमान में ऊपर उठा, और पश्चिम की दिशा में ढलने लगा। जल्द ही रात होने वाली थी। टॉनवेया अकेले रतजगा से डर रहा था। वह बेहद भूखा और प्यासा भी था।

“टॉनवेया को चट्टान की दरार से उगता स्प्रूस का एक पेड़ दिखा। उसने रस्सी का एक सिरा पेड़ से बांधा और दूसरा अपने कमर के गिर्द। इससे लड़खड़ा या लुढ़क कर नीचे गिरने की संभावना खत्म हो गई। सबसे बड़ी बात यह थी कि अब रात में सो सकता था।

“तीसरा दिन भी वैसा ही गुज़रा जैसे पहले दो गुज़रे थे - गरमी, भूख और असहनीय प्यास। यह उम्मीद कि उसके गिरोह के लोग उसे तलाश लेंगे, ग़ायब हो चुकी थी। वे आते भी तो चट्टान पर उसे ढूँढने का खयाल उन्हें नहीं आता। इधर बाज़ बच्चों की माँ भी नहीं लौटी। शायद टॉनवेया की मौजूदगी ने उसे डरा दिया था।

“अब तक बाज़ बच्चे यह समझ चुके थे कि टॉनवेया का इरादा उन्हें नुकसान पहुँचाने का नहीं है। सो उन्होंने उसके साथ दोस्ती कर ली। वे उसे जब उसका मन चाहे, छूने देते थे। टॉनवेया देख रहा था कि वे भी उतने ही भूखे हैं, जितना वह खुद। सो उसने अपना छुरा निकाला और कच्ची चमड़ी से बनी रस्सी के छोटे टुकड़े काट उन्हें खिलाए। इससे उनका रहा-सहा डर भी ग़ायब हो गया।

अब वे उसके आस-पास खेलते, उसे खुद को ऊपर उठाने देते। जब वह उन्हें उठा, सूरज की ओर ऊपर करता वे अपने पंख फड़फड़ाते। इससे उसे अपने हाथों में हल्का सा खिंचाव महसूस होता। इस घटना से टॉनवेया में मन में एक ख़याल उपजा। उसके अपने पंख तो थे नहीं, पर क्या वह अपने बाज़ भाइयों के पंखों का इस्तेमाल नहीं कर सकता? उसने अपने दोनों हाथ आसमान की ओर उठाए और वाकन-टांका से सद्बुद्धि मांगी।

“तीसरे दिन की रात, जिस दिन उसने उन्हें खिलाया था, काफ़ी सर्द और बेआराम थी। टॉनवेया सोने की कोशिश में लेटा था कि ठण्ड से ठिठुरने लगा। उसकी ज़रूरत को भांप दोनों नन्हे बाज़ घोंसला छोड़ उसके पास आ बैठे ताकि उसे कुछ गरमाहट दे सकें। कुछ ही देर में टॉनवेया गहरी नींद सो गया।

“साते-सोते उसे एक सपना आया। सपने में वाकन-टांका ने उससे कुछ कहा। यह कि उसे अपनी हिम्मत बनाए रखनी है। उसके नन्हे बाज़ साथी उसे बचाएंगे। टॉनवेया अचानक जाग गया। दोनों बाज़ों ने जब उसे हिलते-डुलते देखा, वे उसके और क़रीब आ सट गए। उसने अपनी बाँहें उन पर रख दीं। उसे अब भरोसा हो गया था कि उसकी मौत का समय अभी आया नहीं है। वह फिर से अपने लोगों को देखेगा। ज़ाहिर है कि इससे उसका डर जाता रहा।

“इसके बाद अगले कई दिनों तक टॉनवेया रोज़ अपने बाज़ों को चमड़े की रस्सी के टुकड़े खिलाता रहा। आखिर वह एक पूरी भैंस की खाल से जो बनी थी। बाज़ के बच्चे दिन-ब-दिन बढ़ते और ताकतवर बनते गए। इधर टॉनवेया दिन-ब-दिन पतला और कमज़ोर होता चला गया। एक दिन बरसात हुई। चट्टान में बने गड्ढों में पानी भर गया। उसे पीने के बाद भी वह भूखा और प्यासा था। उसने कोशिश की कि वह अपने बारे में न सोच कर केवल नन्हे बाज़ों की देखभाल के बारे में ही सोचे।

“टॉनवेया हर दिन बाज़ बच्चों को उनकी टांगों से पकड़ कर ऊपर उठाता ताकि वे अपने पंखों को आज़माएं। दिन-ब-दिन उसके हाथ पहले से कुछ ज़्यादा खिंचाव महसूस करते। जल्द ही वह खिंचाव इतना हो गया कि उसके पैर कुछ ऊपर उठने लगे। वह समझ गया कि अपने ख़याल को अमली जामा पहनाने का वक़्त आ गया है। उसने फ़ैसला किया कि उसे जल्दी कदम उठा लेना चाहिए, क्योंकि वह इतना कमज़ोर हो चुका था कि कुछ दिनों बाद शायद कुछ कर नहीं सके।

“चमड़े की रस्सी भी खत्म हो चुकी थी। गड्ढों में भरा पानी पिया जा चुका था। टॉनवेया बमुश्किल खड़ा हो पा रहा था।

“अगली सुबह उसने बड़ी कोशिश कर खुद को सीधा खड़ा किया, और अपने बाज़ भाइयों को पास बुलाया। चट्टान के आगे निकले भाग पर खड़े हो उसने वाकन-टांका से मदद की गुहार की। उसने अपने दोनों हाथों में एक-एक बाज़ पकड़ा, अपनी आँखें बन्द कीं और नीचे छलांग लगा दी।

“पल भर तो उसे लगा कि वह नीचे गिरता ही जा रहा है। तब अचानक उसे अपनी बाँहों में खिंचवा महसूस हुआ। आँखें खोलने पर उसने पाया कि बाज़ उसका वज़न आराम से उठा उड़ पा रहे हैं। कुछ ही पलों में वे नीचे ज़मीन पर उतर चुके थे। टॉनवेया कुछ देर बेदम सा पड़ा रहा, हिल तक नहीं सका। दोनों बाज़ उसके पास बैठे उसकी रखवाली करते रहे।

“कुछ देर सुस्ताने के बाद टॉनवेया धीमे-धीमे पास की छोटी नहर तक पहुँचा। जी भर कर ठण्डा पानी पिया। पास की झाड़ियों पर कुछ बेरियाँ उगी थीं, उसने उन्हें जल्दी-जल्दी खाया। इतना-सा खाने और पानी पी लेने के बाद उसमें मानो जान आ गई। वह अपने शिविर की ओर बढ़ चला। उसकी रफ्तार सुस्त थी, क्योंकि उसे बार-बार आराम करने रुकना पड़ रहा था। पर बाज़ लागातार उसकी चौकसी करते साथ बने रहे।

“चलते-चलते वे उस जगह पहुँचे जहाँ उसने भैंसे को मारा था। भेड़ियों और गिद्धों ने हड्डियों के सिवा सब कुछ चट कर दिया था। पर उसके तीर-कमान वहीं पड़े थे जहाँ उसने छोड़े थे। उसने एक खरगोश का शिकार किया। अपने बाज़ दोस्तों के साथ उसने दावत की। उस दिन देर दोपहर वे शिविर तक पहुँचे। पर पहुँच कर पाया कि गिरोह के लोग तो आगे बढ़ चुके हैं। वह बेहद थक चुका था, सो उसने रात वहीं बिताने का फ़ैसला किया। उसे जल्दी ही नींद आ गई। दोनों बाज़ उससे चिपक कर सोए।

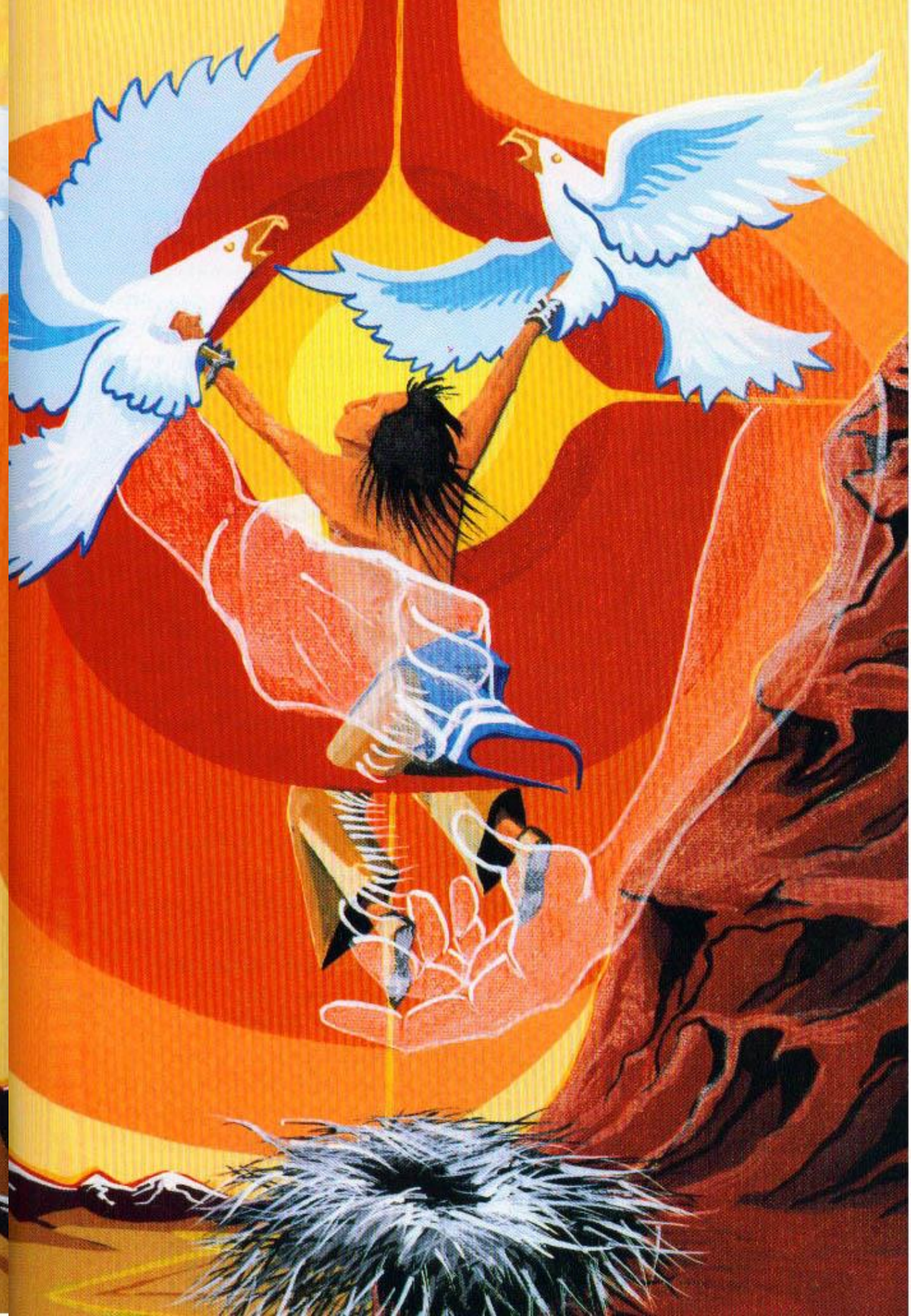

"टॉनवेया जब अगली सुबह उठा सूरज आसमान में चढ़ चुका था। लम्बी नींद ने उसकी काफ़ी ताकत लौटा दी थी। एक बार फिर अपनी हिफ़ाज़त करने के लिए वाकन-टांका का शुक्रिया अदा करने के बाद वह अपने लोगों की निशानी तलाशता आगे बढ़ चला। रास्ते में जो भी कन्द-मूल और बेरियाँ मिलीं, जो शिकार वह कर पाया उसके सहारे बढ़ता गया। वह हर चीज़ अपने बाज़ भाइयों के साथ मिल-बांट कर खाता। वे हमेशा उसके साथ रहते। कभी उसके ऊपर उड़ते, कभी पीछे चलते, और कभी उसके कंधों पर बैठ सुस्ताते।

"दूसरे दिन की देर दोपहर आखिर वे उसके गिरोह के नए ठिकाने तक पहुँच ही गए। पहले तो वे उसे देख डर गए। तब गर्मजोशी से उसका स्वागत किया।

"वे उसकी कहानी सुन अचरज में पड़ गए। वे उन दोनों बाज़ों से भी अचम्भित होते जो टॉनवेया का साथ कभी नहीं छोड़ते थे। उन्हें इस बात की खुशी थी कि उन्होंने हमेशा वनाब्ली के प्रति रहम दर्शाया था, उनका कभी शिकार नहीं किया था।

"वह समय भी आया जब बाज़ बच्चे खुद अपना शिकार करना सीख गए। सबको लगा कि वे अब तो उड़ ही जाएंगे। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। यह सच था कि वे हर सुबह शिकार करने चले जाते पर सांझ होते-होते लौट भी आते। वे बेधड़क टॉनवेया की टीपी में घुसते और रात वहीं बिताते। यह देख भी सबको अचरज होता।

"पर इन्सानों की ही तरह बाज़ों को भी आज़ाद होना चाहिए। टॉनवेया ने, जो अब उनकी भाषा समझने लगा था, उनसे कहा कि वे जा सकते हैं। महान रहस्मयी आत्मा वाकन-टांका ने उनके लिए भी ज़िन्दगी की एक योजना बनाई है, उन्हें उस ज़िन्दगी का मज़ा लेना चाहिए। पहले तो उन्होंने इन्कार कर दिया। पर जब टॉनवेया ने कहा कि जब भी उसे मदद की ज़रूरत होगी, वह उन्हें बुला लेगा, वे मान गए।

"कबीले के लोगों ने उनके सम्मान में एक बड़ी दावत दी। जो कुछ उन्होंने टॉनवेया के लिए किया था उसका शुक्रिया जताने के लिए टॉनवेया ने उनके पंखों के सिरों को चटक लाल रंग से रंग दिया, जो उनकी दिलेरी और बहादुरी का प्रतीक था। तब वह उन्हें ऊँचे पर्वत पर ले गया। एक बार फिर उन्हें आसमान की ओर उठाया, उनसे विदा ली और उन्हें ऊपर उछाल दिया। वे अपने पंख फैला कर उड़ चले। टॉनवेया उन्हें तब तक देखता रहा, जब तक वे सूरज की आँख में ओझल न हो गए।

"इस घटना के बाद कई बर्फ के मौसम गुज़र चुके हैं। टॉनवेया भी एक अर्से पहले मर चुका है। पर लाल सिरे के पंखों वाले बाज़ अब भी नज़र आते हैं। वे हमेशा जोड़े में होते हैं, और इन्सानों से नहीं डरते। कुछ लोग कहते हैं कि वे वही बाज़ हैं, जो टॉनवेया के पवित्र बाज़ थे, क्योंकि वनाब्ली कई बर्फों तक जीते हैं। पर कई दूसरे उन्हें पवित्र बाज़ों की सन्तान मानते हैं। कहा जाता है कि जिसे भी लाल सिरे के पंखों वाले बाज़ दिख जाएं, उसे उनकी सुरक्षा मिलती रहेगी। केवल निडर और बहादुर योद्धा ही बाज़ों के वे पंख पहन सकता है, जिनके सिरे लाल हों।"

जब वासीनागी ने कहानी खत्म की तो उसने पलट कर देखा कि लाल पंखों वाले बाज़ अब भी उनका पीछा कर रहे हैं या नहीं। वे वहीं थे। उसे तब पता चल गया कि उसका बेटा चानो उन लोगों में से है जिसे यह आशीर्वाद मिला है कि वह जीवन में बहुत अच्छे और नेक कर्म करेगा।